Bireswarananda Memorial Home, Baruipur

Sarat passed away-
I saw in the media channels,
Sarat passed away,
The boy passed away due to malnutrition in the Baruipur home.
The seventeen year old boy didn't get food for many days-
The ones surviving, will die :
They are handicapped, can't talk clearly.
They haven't eaten fish, eggs, never seen meat .
A bowl of puffed rice in the morning,
Lunch with rice and very thin lentils soup,
Dinner with starvation.
Many have bent arms and legs,
Some have wounds in their whole body.
Their eyelashes are occupied by worms-
They sleep on the cold floor
Beside cats and dogs;
I saw in the TV -
The boy was having a guava eaten by a crow
"I usually have stomach pain, I haven't eaten for many days
If I don't eat this, I'll die
The Super slaps us if we ask for food
He beats us with a rod."
Succumbed to malnutrition, most of their bones are very much countable.
Only 24 rupees is catered for forty boys each day!
Still they are alive,
They are still alive even after not being able to eat till this day.
But surely they will die someday-
Any fine day:
So many boys like them
In utter winter,
Born like this and dies .
They die out of hunger,
They die out of cold,

In this dense forest of crowd,
Who cares for whom?
In this dense forest of crowd ,
Who really gets to care?
Alas!

বীরেশ্বরানন্দ মেমোরিয়াল হোম, বারুইপুর

শরৎ মারা গেছে,
স্টার আনন্দে, ২৪ ঘন্টায় দেখলাম
শরৎ মারা গেছে,
অপুষ্টিতে ছেলেটা মারা গেছে হোমে, বারুইপুরের হোমে।
সতেরো বছরের ছেলেটা খেতে পায়নি বহুদিন,
যারা বেঁচে আছে সব মরে যাবে,
প্রতিবন্ধী ওরা স্পষ্ট কথা বলতে পারে না
ওরা মাছ খায়নি, ডিম খায়নি, মাংস দেখেনি চোখে,
সকালে একবাটি মুড়ি
দুপুরে বরাদ্দ ভাত আর জলের মতো ডাল
রাতের বরাদ্দ অনাহার
রোজ রাতে অনাহার।
হাত পা বেঁকে গেছে অনেকের
সারা গায়ে প্যাঁচরা হয়েছে কারো
চোখের পাতায় পাতায় পোকা ধরে গেছে,
ওরা ঠাণ্ডা মেঝেতে শুয়ে থাকে
বেড়াল কুকুরের পাশাপাশি।
টিভিতে দেখলাম—
ক্ষিদের তাড়নায় কাকে ঠোকরানো পেয়ারা খাচ্ছিল ছেলেটা,

"পেটে ব্যথা হয় আমার, অনেক দিন খাইনি
এটা না খেলে আমি মরে যাব
সুপার খাবার চাইলে চড় মারে,
লাঠি দিয়ে মারে।"
না খেয়ে খেয়ে শরীরের সবকটা হাড় গোনা যায় অনেকের।
চল্লিশজন ছেলের জন্যে বরাদ্দ মোট চব্বিশ টাকা প্রতিদিন!
তবু বেঁচে আছে ওরা,
আজ অবধি খেতে না পেয়েও বেঁচে আছে ওরা,
তবে নিশ্চিত মারা যাবে কোনোদিন
যে কোনোদিন।
কত কত শরতেরা
কত কত হেমন্তরা
কত কত বসন্তরা
নিদারুন শীতকালে
এভাবেই জন্মায় আর মরে যায়,
না খেরে মরে যায়
শীতে কেঁপে মরে যায়।
এ গভীর জনঅরণ্যে
কে কার খোঁজ রাখে?
এ গভীর জনঅরণ্যে
কে কার খোঁজ পায়?
হায়!

वीरेश्वरानंद मेमोरियल होम, बारुईपुर

शरत मर गया,

स्टार आनंद,२४ घंटे में देखा,

शरद मर गया।

कुपोषण से वह लड़का बारुईपुर के होम में मर गया।

सत्रह साल के उस लड़के को,

कई दिन से भोजन नहीं मिला था,

जो लोग जिन्दा है,सब मर जाएंगे,

वे लोग विकलांग हैं,ठीक से बात नहीं कर पाते।

वे मांस,मछली,अंडे न खाए हैं,न देखे हैं।

सुबह एक कटोरी में मुर्रा,

दोपहर को चावल और पानी समान डाल,

रात को सिर्फ अनाहार,

रोज़ रात को अनाहार।

बहुतों के हाथ पैर टेढ़े हो गए हैं ,

कुछ के सारे शरीर में घाव हो गए हैं।

आँखों की पलकों में कीड़े जम गए हैं।

वे ठन्डे फर्श पर सोए रहते हैं,

कुत्ते-बिल्लियों के साथ।

टीवी में देखा,

भूख से बेहाल होकर,

वह लड़का कौए द्वारा ठुकराए हुए अमरुद खा रहा था ,

पेट में दर्द होता है,बहुत दिन भूखा था।

यह नहीं खाऊँगा तो मार जाऊँगा।

खाना मांगने पर सुपर थप्पड़ मारता है ,लाठी से पीटता है,

बिना खाना खाए बहुतों की हड्डियां गिनी जा सकती हैं।

चालीस लड़कों के लिए प्रतिदिन केवल चौबीस रूपए तय है।

फिर भी वे जिन्दा है l

आजतक बिना खाकर भी वे जिन्दा हैं l

लेकिन किसी दिन जरूर मारे जाएंगे,

किसी भी दिन l

कितने कितने शरत,

कितने कितने हेमंत ,

कितने कितने बसंत,

कठोर शीत में इसी तरह जन्म लेते और मर जाते हैं l

अनाहार से मर जाते हैं l

ठण्ड में काँपकर मर जाते हैं,

इस गहरे जनअरण्य में,

कौन किसकी खबर रखता है ?

इस गहरे जनअरण्य में

किसको किसकी खबर मिलती है?

हाय l